एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

आलू की फसल में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन का महत्व एवं उपयोगिता

(*अनिल कुमार पाल[1] एवं संजीत कुमार[2])
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, बलिया, उत्तर प्रदेश
[2]वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, बलिया, उत्तर प्रदेश
(आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: anilkumarpal500@gmail.com

आलू विश्व में सबसे क्षेत्रफल में सबसे अधिक उगाई जाने वाली फसल है, तथा इसे सब्जियों के रूप में प्रयोग किया जाता है, तथा भारत में विशेष पैमाने पर उ0प्र0 में इसका उत्पादन किया जाता है, तथा वर्तमान समय में किसान आलू की खेती करके विशेष रूप से आय का जरिया बना रहे है, व अच्छा मुनाफा किसान कमा रहे है, जहां कृषि वैज्ञानिकों द्वारा आलू की नयी किस्मों को विकसित करने के लिए विभिन्न शोध केन्द्रों पर शोध कार्य किये जा रहे है, तो वहीं पर किसानों द्वारा अपने स्तर पर इसकी खेती में नवाचार कर लाभ कमा रहे है, लेकिन आलू की अच्छी खेती एवं पैदावार के लिए फसल में एकीकृत पोषक तत्वो का प्रबंधन अति आवश्यक है।

आलू एक बहुत महत्वपूर्ण फसल है ये धान, गेहूँ और मक्का के बाद चौथी, सबसे महत्वपूर्ण फसल है एवं भारत के आजादी के फलस्वरूप जहां देश में करीब 50 लाख टन आलू का उत्पादन होता था, वही आज 5 करोड़ टन आलू की पैदावार की जा रही है। इसके अलावा प्रोसेसिंग करके भी किसान आलू से खुब फायदा कमा रहे है तथा आलू का 50–60 प्रतिशत उत्पादन फसल के एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर ही निर्भर करता है इन फसलों में पोषक तत्व प्रबंधन के लिए 4 त के नियम को विस्तार से बताते हुए समझाया कि पहले त से तात्पर्य है कि राइट फर्टिलाइजर दूसरे त से राइट क्वांटिटि को दर्शाता है, वही तीसरा त से राइट टाइम व चौथा त से राइट प्लेस के लिए जाता है। इसके बाद आलू की खेती में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन का बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसके वजह से आलू के उत्पादन बढाने में अग्रणी है।

आलू की फसल में खाद का उपयोग

किसानों को आलू की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए मिट्टी में पोषक तत्वों की जानकारी लेने के बाद जो भी हमारे पास गोबर की खाद, कम्पोस्ट खाद, केचुऐ की खाद आदि आलू की फसल में प्रयोग करें जिसे मृदा की उर्वरता शक्ति में बढ़ोतरी हो तथा मिट्टी में कार्बन, नाईट्रोजन अनुपात बढ़े जिससे मिट्टी में पाये जाने वाले सुक्ष्म जीवों की संख्या में बढ़ोतरी हो, जिसमे मृदा में वायु का संचार तेजी से हो, जिससे फसलों को वायु मिल सके जिसके कारण पौधों की वृद्धि तेजी से हो सके और मृदा में जल धारण क्षमता की गति अति शीघ्र हो व मृदा कणों को कैल्शियम तेजी से बॉधे रखे और यथा शीघ्र मृदा की कार्बनिक पदार्थ की मात्रा में वृद्धि हो जिस मिट्टी की आर्गेनिक कार्बन 0.75–1.2 प्रतिशत तक पाई जाती है वह मृदा सबसे उपजाऊ मानी जाती है, तथा जीवांस की मात्रा मिट्टी में बहुत तेजी से वृद्धि होती है, तथा मृदा में डाले जाने वाले रासायनिक खादों जैसे यूरिया, डीएपी एवं म्यूरेट आफ पोटास पर रोक लगाए, इसके प्रयोग से मिट्टी में पाये जाने वाले सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी आ रही ही तथा सूक्ष्म जीवों को पर्याप्त मात्रा में भोजन नही मिल पा रहा है तथा केचुआ विलुप्त की स्थिति में आ रहे है इस

लिए मृदा के स्वास्थ का ध्यान रखते हुए रसायनिक उर्वरकों पर रोक लगाया जा सकें, जिससे मृदा की उर्वरता को समान्य बनाये रखें और फसलों की उत्पादन में वृद्धि कर किसान अपने आय को कम लागत में अच्छी पैदावार प्राप्त कर सके और मिट्टी की संरचना प्रभावित न हो सकें एवं किसानों को समय समय पर मिट्टी की जाँच करवाते रहना चाहिए, जिससे पता चल सके की मृदा में कौन से तत्व की कमी या अधिकता है जिससे उसके आधार पर हम एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन कर सकें।

आलू की गुणवता को बरकरार रखने के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन के तहत उर्वरकों की कितनी मात्रा कब–कब मृदा में डालनी चाहिए, यदि हम आलू की फसल को बीज के लिए उत्पादन कर रहे है तो नाइट्रोजन की मात्रा 150–175 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर, 80 किग्रा0 फासफोरस प्रति हेक्टेयर एवं 100 किग्रा पोटैशियम प्रति हेक्टेयर का उपयोग करना चाहि, क्योंकि आलू की फसल 80–90 दिनों में तैयार हो जाती है, और मिट्टी में जैविक गतिविधियों को बढ़ाते रहना चाहिए, जिससे मृदा में पाये जाने वाले सूक्ष्म जीवों की क्रियाशीलता में बढ़ोतरी हो सकें एवं मृदा उर्वरता का संतुलन बना रहे।